P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-IV*December-2014
E: ISSN NO.: 2349 – 980X

नागार्जुन साहित्य में राजनीतिक चिंतन

एम.एल. पाटले
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
ठाकुर छेदीलाल शासकीय स्नाकोत्तर महाविद्यालय, जांजगीर

सारांश

साहित्य में सृजन प्रत्यक्ष एवं चिन्तन परोक्ष रूप में होता है। नागार्जुन साहित्य में चिंतन के विविध आयाम है।आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन में सुधारवादी, उदारवादी,उग्रवादी, सर्वोदयी और समाजवादी धाराएं दिखाई देती है। इन धाराओं में सभी व्यक्ति और समूह से अपेक्षा की जाती है कि अपने कर्तव्यों और दायित्वों के पालन में ईमानदार हों। विरोधाभास की स्थिति में उसमें सुधार की बातें कही जाती है। नागार्जुन साहित्य में जन भावनाओं का ख्याल रखा गया है तथा शासन तंत्र पर आक्रोश भी व्यक्त किया गया है।

नागार्जुन इस शतरंजी संसार में घुटने नहीं टेके संघर्षशीलता कवि में उत्कर्ष पर है। वे जनसंघर्ष के समर्थक थे।उनका राजनीतिक चिंतन जनता की दशा में सुधार लाने के लिए है।नागार्जुन साहित्य में राजनीतिक मोहजाल का सजीव चित्रण है।

मुख्य शब्दः नागार्जुन साहित्य, राजनीतिक चिंतन

प्रस्तावना

किसी भी देश की उन्नति उस देश के लोगों के चरित्र, उनके काम करने की क्षमता और कुशलता, कर्तव्य परायणता और देश भक्ति की भावना पर निर्भर करती है। लेकिन साथ ही साथ जो हमें स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं देती है किन्तु हमारी संस्थाओं, हमारी क्षमताओं, हमारे दृष्टिकोण और राष्ट्र को लगातार प्रभावित करता है, वह है चिंतन अथवा दर्शन। किसी भी समाज को चिंतन ही दिशा देता है।

राजनीतिक चिंतन के अंतर्गत उन समस्याओं की विस्तारपूर्वक विवेचना की जाती है जो हमारे सार्वजनिक जीवन से संबंध रखती है जैसे सुरक्षा व्यवस्था, न्याय, सत्ता के स्वरूप शासक और शासितों से संबंध, समाज के विभिन्न वर्गों के आपसी संघर्ष से पैदा होने वाली समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। चिंतन एक निरंतर मानवीय प्रक्रिया है। मनुष्य शांति, समन्वय और स्थिरता की स्थिति में भी चिंतन करता रहता है। ऐसा इसलिए कि जीवन और अधिक सार्थक बन सके और इसके लिए वह लगातार नये मूल्यों और साधनों की खोज में लगा रहता है।

समसामयिक राजनीतिक चिंतन धाराओं में उदारतावाद, प्रजातंत्र, समाजवाद, साम्यवाद एवं गांधीवाद प्रमुख है। नागार्जुन जनकवि थे। जनता से बहुत प्रेम करते थे किन्तु राजनीतिक दृष्टि से स्थिर नहीं रहे। उनकी समझ में उतार–चढ़ाव आता–जाता रहता है। यह भटकाव उन्हें कभी– कभी अपनी प्रकृत भावना के विरूद्ध में पहुंचा देता है। कुछ लोग यह मानते हैं कि इस भटकाव का कारण जनता के प्रति असीम प्रेम है। डॉ. शिव कुमार मिश्र जी कहते हैं –''नागार्जुन के पास परिपक्व राजनीतिक विवेक है फिर भी जनता उनकी सबसे बड़ी कमजोरी है।जनता के प्रति उनका यह व्योमाह अनेक अवसरों पर उनके राजनीतिक विवेक तथा परिपक्व सामाजिक सोच पर हावी होता हुआ उन्हें इस कदर भावुक बना गया है कि बिना यह सोचे कि साधारण जन बल को बहलाया जा सकता है, उन्हें दिग्भ्रमित किया जा सकता है। अवसरवादी राजनीति उसका गलत इस्तेमाल भी कर सकती है, वे जन उभार में बह गये।''

जनता दिग्भ्रमित होकर, प्रलोभन में आकर अवसरवादी राजनीति के हाथों की कठपुतली बनती है। नागार्जुन भी जनता की भावुकता को देखकर भावुक होकर भ्रष्टाचार के खिलाफ अपनी लेखनी चलाये। जिसका अधिकांश हिस्सा तीखा एवं व्यंग्यात्मक है।नागार्जुन का राजनीतिक चिंतन समस्त आयामों को स्पर्श करता है। दूसरों के आदर्शों के सहारे अपना काम निकालने वाले लोगों पर नागार्जुन चिंतन प्रकट करते हैं कि लोग गांधी जी के आदर्शों का नाम लेकर कैसे अपना काम निकालते हैं –

शुरू हो गया नेताओं का
मधुर बुझावन, मधुर सिखावन

दुनिया में जहाँ भी दमन और संघर्ष है, नागार्जुन की सहृदयता भौगोलिक सीमाएं तोड़कर जनता की तरफदार बनती है। 'लुमुम्बा' पर अपनी कविता में नागार्जुन ने लिखा है –

आफ्रीका की काली मिट्टी लाल हो गई आज
गोरे बौनों की साजिश बिकराल हो गई आज
मैं सुनता हूँ कीलों वाली बूटों की ठनकार
मैं सुनता हूँ जंग लगी हथकड़ियों की झनकार
मैं सुनता हूँ राष्ट्र संघ की छलनामय चुमकार
मैं सुनता हूँ बंधु तुम्हारा प्रतिरोधी हुंकार

नागार्जुन की राजनीतिक कविताएं बहुत ही प्रभावशाली है। उनमें भावावेश संयमित हुआ है, चित्रात्मकता आई है। जनता के जीवन के अत्यंत निकट का परिचय रखने के परिणामस्वरूप लोक जीवन के दृश्यों एवं प्रसंगों के उपयोग से कला का निखार ने अभिव्यंजना को सूक्ष्म बनाने का काम वे जिस खूबी से करते है आजकल के कवियों में दुर्लभ है। नागार्जुन की कविताओं में प्रजातंत्र की होम का सुन्दर चित्रण मिलता है –

''सामन्तों ने कर दिया प्रजातंत्र का होम
लाश बेचने लग गये खादी पहने डोम
खादी पहने डोम लग गये लाश बेचने
माक गरजे, लगे जादुई तारा बेचने
इंद्रजाल की छतरी ओढ़े श्रीमंतो ने
प्रजातंत्र का होम कर दिया सामन्तों ने''

प्रजातंत्र को नागार्जुन ने अपनी कविताओं में विशेष स्थान दिया है। राजनीतिक मोहजाल का जीवन्त चित्रण दृष्टव्य है –

लगता है
प्रजातंत्र का रथ
उतर गया है पटरी से
लगता है
सारी की सारी पार्टियों के नेता
रूचिपूर्वक खेल रहे हैं
दलीय स्वार्थों के शतरंज अंधे घृतराष्ट्र की मोहमाया
भलीभांति प्रवेश कर गई है
दलपतियों के अन्तः करण में
लगता है
बुद्धिजीवियों की हमारी बिरादरी भी
शत प्रतिशत लिप्त है।

भारतीय जनता राम राज्य के रूप में जो कल्पना करती है उसमें उनकी मानवीय आकांक्षा और सांस्कृतिक विरासत का मेल होता है। राम राज्य के रूप में यहाँ की जनता अत्याचारों से मुक्त, प्रेम, भाईचारे और समानता पर आधारित समाज का चित्र खींचती है। नेताओं के फरेब के खिलाफ जनताओं का पराजित विश्वास आक्रोश के साथ प्रकट होता है। नागार्जुन की कविताओं में राम राज्य के मानवीय स्वप्न और उसके आगे घुटने टेक देने वाली नीति का अन्तर्विरोध बड़ी तीव्रता से उभरा है –

''लाज शरम रह गई न बाकी गांधी जी के चेलों में
फूल नहीं लाठियाँ बरसाती राम राज्य के जेलों में।''

भोली भाली जनता से जय जयकार सुनने के लिए नेताओं के कान तरसते रहते हैं। 'आओ रानी हम ढोयेगें पालकी' में सजीव चित्रण है। राजनीतिक कविताओं के सन्दर्भ में नागार्जुन की अन्तर्दृष्टि पैनी थी। नागार्जुन यह जानते और मानते रहे है कि आधुनिक भारत मे गांधी जी से दूसरा बड़ा जननेता नहीं हुआ जिसने राष्ट्रीय स्तर पर जनता को इतनी बड़ी संख्या में राजनीति में सक्रिय किया हो। गांधी जी के प्रति नागार्जुन की सारी श्रद्धा उनके जननायक के रूप को लेकर है। इस भावना से वशीभूत होकर वे न तो गांधी जी का वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन त्याग देते हैं और न ही गांधी जी के अनुयायियों के दो मुंहेपन पर हमला करना। यथा –

''बापू के भी ताऊ निकले, तीनों बंदर बापू के।
सरल सूत्र उलझाऊ निकले तीनों बंदर बापू के।''

पूंजीवादी हितों की तरफदारी करने वाले जिस राजनीतिक संस्कृति का विकास करते हैं उस पर नागार्जुन के व्यंग्यात्मक चिंतन मुखर हुआ है। नागार्जुन के कुल तेरह उपन्यास हैं। ग्यारह हिंदी में और दो मैथली में। औपन्यासिक कृति के रूप में 'मैथली' उपन्यास 'पारो' पहली रचना है। 'रतिनाथ की चाची' पहला उपन्यास है जो 1948 में हिन्दी पाठकों के सामने आता है। रतिनाथ की चाची में राजनीतिक चिंतन की छटा दिखाई देती है – ''जयनाथ भागकर बड़हड़वा चले गये। चाची को भी दो दिन का बुखार आया, मगर वह शीघ्र ही ज्वर मुक्त हो गई। छोटे–बड़े सौ से कम नहीं मरे होंगे। सरकारी सहायता तब पहुंची जब सत्तर के करीब लोग मर चुके। कुनैन की टिकिया बटी थी, किन्तु गरीबों को वह मुश्किल से ही मिली थी। तुलसी का काढ़ा पी–पीकर आखिर कब तक लोग मलेरिया का मुकाबला करते।''

बलचनमा बिहार के दरभंगा जिले के ग्रामीण परिवार पर आधारित है। इसमें पीड़ित मजदूर वर्ग की शोषण की कथा है। बलचनमा की बहन रेवती का इज्जत लेने का प्रयास मझले मालिक ने किया और बलचनमा पर चोरी का इल्जाम लगाया गया। जमींदारों के जुल्म और अत्याचारों से उसका परिवार त्रस्त रहता है। डॉ. सुरेश सिन्हा लिखते हैं – ''उपन्यास का नायक बलचनमा हिन्दी के श्रेष्ठ यथार्थवादी नायकों की परम्परा में अपना प्रमुख स्थान रखता है। उसकी तुलना गोदान के होरी और अश्क के चेतन जैसे नायकों से की जा सकती है।

नागार्जुन साहित्य में जनता के जीवन के सुख, दुख, स्नेह, सौहार्द्र, चिंता–रोष और आशा–आकांक्षा सम्मिश्रित है। नागार्जुन का व्यंग्य भी गहन करूणा का परिणाम है। उनका राजनीतिक व्यंग्य जनता की दशा में सुधार के लिए है। इस दिशा में उनकी बेचैनी तथा छटपटाहट सामाजिक जड़ता को तोड़ने के लिए है। नागार्जुन जनसंघर्ष के घोर समर्थक थे। नागार्जुन इस संघर्ष में जनता का साथ देकर उन्हें जागृतकर रहे थे।

बाबा के नाम से पुकारे जाने वाले वैद्यनाथ मिश्र (नागार्जुन) ने अपने जीवन के कटु संघर्षों की झलक इन पंक्तियों में अभिव्यक्त की है –

पैदा हुआ था मैं
दीन हीन अपठित किसी कृषक कुल में
आ रहा हूँ पीता अभाव का आसव ठेठ बचपन से

कवि मैं रूपक हूँ दबी हुई दूब का
जीवन गुजरता प्रतिपल संघर्ष में।

नागार्जुन ने जेलों में रहकर नारकीय कष्ट को भोगा है, उस समय फैक्टरियों के अंदर बाहर श्रमिकों का शोषण हो रहा था कभी दो पाटों के बीच पीस रहे श्रमिकों के प्राणों की चर्चा करते नजर आते हैं तो कभी रानी के दरबार में जाने की बात करते हैं। संघर्ष शीलता कवि में चरमोत्कर्ष पर है। राजनीति की क्रुरताओं का यथार्थ अंकन नागार्जुन साहित्य में हुआ है। युग परिवेश और जीवन परिवेश का चित्रण भी कुशलता के साथ किया गया है। सभी प्रकार की विडम्बनाओं एवं विसंगतियों पर करारा व्यंग्य किया गया है।

संदर्भ

1. नागार्जुन – चुनी हुई रचनाएं भाग 1, 2, 3 संपादक शोभाकांत मिश्र
2. समकालीन जनवादी कविता – डॉ. शिव कुमार मिश्र
3. हिन्दी उपन्यास का उद्‌भव और विकास – डॉ. सुरेश सिन्हा
4. नागार्जुन जीवन और साहित्य – डॉ. प्रकाश चन्द्र
5. नागार्जुन की कविता – अजय तिवारी
6. छायावादोत्तर हिन्दी गीति काव्य – डॉ. सुरेश गौतम
7. नई कविता के प्रमुख हस्ताक्षर – डॉ. संतोष कुमार तिवारी